International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; May 2018; Page No. 465-468

भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन और राजनीति में महिलाएँ एवं उनका महत्वपूर्ण योगदान

संदीप कुमार
शोधथी, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी के भारतीय समाज सुधर आंदोलनों के इतिहास में महिला मुक्ति का प्रश्न केन्द्रीय भूमिका में रहा है। 20वीं शताब्दी के प्रांभिक दौर में भी यह राष्ट्रीय आंदोलन की सूची में कायम रहा। जहाँ एक ओर महात्मा गाँधी की 'संत' रूपी छवि ने उनके नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्राता संग्राम को धर्मिक रंग प्रदान किया वही दूसरी ओर राष्ट्र प्रेम स्वयं एक ध्र्म के रूप में उभरा, जिसमें राष्ट्र आराध्य देवी या मातृ–भूमि के रूप में रहा। महिलाओं की आन्तरिक शक्ति की अभिव्यक्ति के लिए इस आन्दोलन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। हालाँकि उनकी अंतशक्ति की इस जागृति तथा दीर्घ काल से उनके विरु(चल रहे दमन चक्र में अंतर्विरोध् निहित था। गाँधीजी ने इस समस्या के समाधन के लिए स्वतंत्राता आंदोलन को अहिंसक एवं अध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया, जिसमें जुनून, त्याग आदि जैसे तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण थे, जो महिलाओं के नैसर्गिक गुण के रूप में सर्वमान्य थे। इसके अलावा इसके पीछे कांग्रेस की एक और नीति कार्य कर रही थी जिसके तहत उनका उद्देश्य महिलाओं को शामिल कर स्वतंत्राता आंदोलन का विस्तार करना था।

महिलाओं के इस राजनीतिकरण के महत्व को भी समझना आवश्यक है जैसे इसका उनके गृहस्थ जीवन पर प्रभाव उनकी सामाजिक स्थिति में बदलाव, महिला संबंधे नए मुद्दों का उदय तथा आन्दोलन में महिला सहभागियों के प्रति पुरुष भागीदारों के नजरिये में बदलाव आदि।

विदेशी शासन उनकी संस्कृति, उनके ध्र्म तथा अध्ययन के माध्यम के रूप में उनकी अंग्रेजी भाषा ने भारतीयों के राष्ट्रीय चरित्रा को समाप्त करने हेतु प्रर्याप्त प्रयास किए। ब्रिटिश शासन, अंग्रेजी अध्ययन प(ति तथा मिशनरियों द्वारा प्रचारित ईसाइयत ने भारत में सामाजिक परिवर्तन हेतु उन्नीसवीं शताब्दी में कई सुधर आन्दोलनों को जन्म दिया। महिलाओं की जागृति में राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित उदारवादी सामाजिक सुधर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वे महिलाओं के वैधनिक अध्किारों की माँग करते हुए सामने आए। ब्राह्म समाज की स्थापना करते हुए उन्होंने भारतीय समाज की घृणित सती व्यवस्था की समाप्ति का आह्वान किया। आगे चलकर ईश्वर चंद्र विद्यासागर विध्वा पुनर्विवाह के अग्रदूत बने। आर्य समाज के माध्यम से स्वामी दयानंद सरस्वती ने पंजाब में वैदिक सभ्यता को स्वतंत्रा एवं मुक्त समाज को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। दक्षिण भारत में एनी बेसेन्ट ने थियोसोपिफकल सोसाईटी के माध्यम से राष्ट्र स्तर पर महिलाओं व पुरुषों दोनों के लिए समान शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।[1] इसी समय कई महिला समाज सुधरकों ने भी जैसे पंडिता रामाबाई, रामाबाई रानाड़े, लेड़ी बोस तथा भीकाजी कामा, ने स्वयं को महिलओं के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया।[2] रूखमाबाई कारावास रूपी दण्ड तक झेलने को तैयार थी क्योंकि वह अपने वैवाहिक कर्तव्य को न निभाकर और पढ़ना चाहती थी, जो अन्तत उसने किया भी।[3] पंडिता रामाबाई के मुक्ति सदन, जो उच्च जाति की विध्वाओं के लिए तथा पंडिता रानाड़े के संस्थान ने जो उन्होंने अपनी गरीब बहनों की मदद के लिए बनाया था, ने महिलाओं को शिक्षित करने व उनकी स्थिति के सुधर में व्यापक योगदान दिया। दोनों ही महिलाओं ने अपने कार्यो को इस उद्देश्य से निर्देशित किया महिलाओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे आत्मनिर्भर बन सके। भोपाल की महिला शासक सुल्ताना जहाँ बेगम साहिबा भी एक महान सुधरक थी। उन्होंने किताबें लिखीं, अस्पता, स्कूल आदि की स्थापना भी की। वे अलीगढ़ मस्लिम विश्वविद्यालय की कुलपति भी रही थी। साथ ही उन्हें मीडिया के मार्गदर्शक बर्नाकुर के महान समर्थक के रूप में भी जाना जाता है। बड़ौदा की महारानी के प्रभाव को भी नरजअंदाज नहीं किया जा सकता 1911 में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'दि पॉजिशन ऑपफ विमेन इन इंडियन लाइपफ'[4] महिला आंदोलन पर लिखी गई एक शास्त्रीय पुस्तक है। अपने पूरे जीवन में उन्होंने महिलाओं का नेतृत्व किया। उन्हीं के प्रयास से अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का प्रारंभिक दौर संपन्न हो सका। इसने महिलाओं के शैक्षणिक सुधर, सामाजिक सुधर की शीघ्र शुरूआत, बाल विवाह के विरु(कानून के लिए आंदोलन आदि मुद्दों पर उनके विचार–विमर्श के लिए मंच प्रदान किया।

1883 में पहली बार कोई महिला भारतीय विश्वविद्यालय से स्नातक हुई। मैसूर की श्रीमती रूक्मिअम्मा, बंगाल की श्रीमती कोनेर्शिया सोराबजी, मद्रास की डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी, जैसी विदुषी महिलाओं ने वि(ता के क्षेत्रा में महिलाओं की प्रतिष्ठा बढ़ायी। इन्होंने अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर लोगों के लिए मिसाल स्थापित की। उनसे प्रेरणा पाकर महिलाओं को यह विश्वास हो गया कि वे भी राजनीति कानून या ललित कला जैसे क्षेत्रों में रचनात्मक भूमिका निभा सकती है। इन घटनाक्रमों ने राष्ट्रीय जीवन तथा नागरिक सेवाओं में महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर की स्थिति में लाने में मदद की।

भारतीय राजनीति में महिलाएँ

गाँधी ने स्त्रियों को दक्षिण अप्रफीका में सर्वप्रथम 1913 में सार्वजनिक प्रदर्शनों में उतारा था और भारतीय स्त्रीत्व की भारी राजनीतिक क्षमता का एहसास किया था। भारत वापसी के बाद 1919 के रौलट सत्याग्रह में उन्होंने औरतों को राष्ट्रीय अभियान में भाग लेने को पिफर आमंत्रित किया, लेकिन इस दिशा में कई सार्थक पहल हो इससे पहले ही उसे वापस ले लिया गया। 1921 में जब अहसयोग आंदोलन शुरू हुआ तो गाँधी ने स्त्रियों के लिए

शुरू–शुरू में एक सीमित भूमिका बताई अर्थात् बहिष्कार और स्वदेशी के अभियान में। लेकिन स्त्रियों ने अपने लिए और भी सक्रिय भूमिका का दावा किया।

आधुनिक काल में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अठारहवीं शताब्दी के उत्तरा(एवं बीसवीं शताब्दी के पूर्वा(में हुई है। यद्यपि उपनिवेश ने दोनों ही, अभिजन तथा गैर अभिजन महिलाओं की भूमिका को प्रभावित किया तथापि दोनों की भूमिकाएँ अलग–अलग रूपों में प्रभावित हुई। अभिजनेत्तर महिलाओं ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरु(संघर्ष किया। अभिजन महिलाओं ने मुख्यतः भारतीय पुनर्जागरण 19वीं शताब्दी के समाज सुधर आन्दोलन में हिस्सा लिया। इनके संघर्ष एवं आक्रामकता का मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के विरु(हो रहे पारंपरिक अन्याय जैसे महिला, भ्रुणहत्या, सती प्रथा, बालविवाह तथा विध्वा पुनर्विवाह को प्रतिबंध्ति करने वाले नियम को समाप्त करना था। यह संघर्ष समानता के लिए नहीं बल्कि समाज में महिलाओं और पुरुषों की पृथक एवं सम्पूर्ण भागीदारी पर बल देता था। यह आन्दोलन महिलाओं को बेहतर माँ एवं पत्नी बनाने का प्रयास था। चूँकि इन महिला आंदोलनों ने प्रारंभिक परिवार संरचना एवं महिलाओं की घर एवं समाज में भूमिका पर आधरित करने का प्रयास किया अतः कुछ पुरुषों ने भी इसका समर्थन किया।

भारतीय राजनीतिक स्वतंत्राता का स्वअभिप्रेरित आन्दोलन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ आरंभ हुआ। प्रारम्भ से ही इसकी सदस्यता के लिए महिलाओं तथा पुरुषों दोनों पर समान शर्ते आरोपित थी। कांग्रेस के 1889 के बॉम्बे अध्विेशन में दस महिलाओं ने भाग लिया।[5] 1904 के कलकत्ता अध्विेशन में टैगोर परिवार की एक कांग्रेसी बंगाली महिला, श्रीमती सरलादेवी चौध्रानी ने कांग्रेस के इतिहास में अपना नाम लिखा, जब उन्होंने एक समूह को 'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय गीत गाने के लिए प्रशिक्षित किया। यह गीत राष्ट्रवादी अपील की वजह से जल्दी ही प्रसि(हो गया। उन्होंने आर्य समाज की महिला शाखा की शुरूआत की।

श्रीमती एनी बेसेन्ट के 1914 में भारतीय राजनीति में आगमन ने महिलाओं एवं पुरुषों दोनों की राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहित किया। 1874 में, उन्होंने लिखा कि महिलाओं को भी कानून निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी निभानी चाहिए क्योंकि उनकी भी कानून के साथ संलग्नता अपेक्षित है।[6] 1915 से उन्होंने प्रसि(होम रूल आन्दोलन प्रारम्भ किया।

महात्मा गाँधे ने भी स्वतंत्राता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं से सीता एवं द्रौपदी की तरह शु(, संयमित एवं नियंत्रित भूमिका निभाने का आग्रह किया। उनके अनुसार समानता का अर्थ यह नहीं कि महिला एवं पुरुष एक ही कार्य करें। महिलाओं एवं पुरुषों की क्षमता अलग होती है। अतः उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करनी चाहिए।

उन्होंने महिलाओं से स्वदेशी आन्दोलन में 'उपवास' करने विदेशी वस्त्रा को त्यागकर खादी वस्त्रा धरण करने की अपील की। श्रम के सम्बंध में, उन्होंने महिलाओं को खादी निर्माण तथा लघु उद्योग में उनकी भूमिका के लिए आह्वान किया।

असहयोग आन्दोलन

1920–22 के दौरान हुए असहयोग आन्दोलन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। उन्होंने खादी को प्रसि(बनाने का प्रयास किया तथा शराब की दुकानों के सामने प्रदर्शन किया। बम्बई में राष्ट्रीय महिला आयोग की महिलाएँ अपने दो लक्ष्यों स्वशासन तथा महिला कल्याण के प्रति प्रतिब(थी ये दोनों ही उद्देश्य अंर्तसंबंध्ति थे, महिलाओं का विकास तब तक नहीं हो सकता था जबतक वे राजनीतिक में भागीदारी नहीं निभाती। इन महिलाओं ने वेल्स के युवराज के भारत आगमन के विरु बम्बई में हड़ताल भी की।

श्रमिक वर्ग की महिलाएँ

राष्ट्रीय आन्दोलन महज एक सुचारवादी आन्दोलन था। जिसमें स्वेदेशी आन्दोलन ने महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराया किन्तु उनके आय का महज पुरुषों की आय में परिपूरक के रूप में देखा गया। पर 1920 के दशक के अंत तक महिलाओं ने मजदूर आन्दोलनों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। 1930 में राष्ट्रीय कांग्रेस समिति ने ग्वालियर में श्रमिकों के मुद्दे पर परिचर्चा के लिए विशेष सत्रा का गठन किया। 1931 के लाहौर सम्मेलन में, उन पफैक्टरियों के निकट प्राथमिक विद्यालय आदि के खोले जाने सम्बन्धी प्रस्ताव पास किए गए। जहाँ महिलाएँ बड़ी संख्या में काम करती है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

इस आन्दोलन के प्रदर्शन–रैली में महिलाएँ भी हिस्सा लेना चाहती थी, किन्तु गाँधेजी ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि अंग्रेज भारतीय पुरुषों को कायर न समझे। पिफर भी जहाँ भी रैली रूकती थी भारी संख्या में महिलाएँ गाँधे के भाषण को सुनने के लिए जमा होती थी। नमक सत्याग्रह आन्दोलन में भी हजारों महिलाओं ने नमक बनाकर बेचा। इनमें कमला देवी चट्टोपाध्याय, एनी बेसेन्ट, सरोजनी नायडू तथा मार्ग्रेट कोजिन्स ने इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। इस समय महिलाओं को पुलिस का दमन भी झेलना पड़ा। पुलिस महिला प्रदर्शनकारियों के विरु(भी हिंसक हो गयी थी। इस घटना ने लोगों की प्रतिक्रियाओं को और प्रभावित किया, यहाँ तक कि मीडिया भी उनकी आलोचक हो गई। कई महिलाएँ जेल भेज दी गई और उनकी संख्या लगातार बढ़ती ही रही।

1941 के भारत छोड़ों आन्दोलन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इन्होंने समानान्तर सरकार के गठन सहित विभिन्न कार्यो में मदद की। कइयों को तो आन्दोलन के दौरान अपनी जान दाँव पर लगानी पड़ी। कई आत्म–सुरक्षा समितियों का गठन हुआ, जहाँ महिलाओं को भी प्रशिक्षित किया गया। महिलाओं ने सामंतवाद विरोधे आन्दोलन में भी भाग लिया। 1940 के दशक में महिलाएँ पूर्णतः राष्ट्रीय आन्दोलन की हिस्सा हो गयी थी। क्योंकि देश की स्वतंत्राता ही महिलाओं की सभी समस्याओं का सबसे बड़ा समाधन था।

ऐसी भी महिलाऐं थी जो नवीन एवं आज़ाद भारत के निर्माण के लिए अहिंसा के स्थल पर क्रांतिकारी आन्दोलनों को उचित माध्यम मानती थी। इसमें दुर्गा भाभी, लाडो रानी, अरुणा, आसपफ अली, उषा मेहता तथा अम्मु स्वामी नाथन थीं, जिन्होंने अपने सक्रिय सामाजिक जीवन के माध्यम से देश की सेवा में हाथ बटाया।

मैडम कामा की कहानी भी अत्यध्कि उत्प्रेरक है। 1907 में ही, जब गाँधेजी ने भारत में अपने स्वतंत्राता आन्दोलन की शुरूआत नहीं की थी, तभी उन्होंने भारतीय तिरंगे को लहराया था। उनका प्रभाव भगत सिंह तथा उनके साथियों के विचारों पर भी पड़ा था।

बम्बई की उषा मेहता एक भिन्न प्रकार की क्रांतिकारी थी– जिन्होंने स्वतंत्राता की मशाल को जलाए रखने में मदद की। 1942 के

आन्दोलन की नायिका, अरुणा आसपफ अली ने डॉ. लोहिया तथा जय प्रकाश नारायण के साथ मिलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की समाजवादी शाखा की स्थापना की। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं के बौ(कि प्रतिनिध्त्वि को सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पड़ित तथा सुचेता कृपलानी ने पूरा किया। कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने भारतीय राष्ट्रीय सेना की रानी झाँसी रेजिमेंट का नेतृत्व भी किया।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही भारतीय अभिजन महिलाओं के बीच ही विशु(महिला संगठनों का गठन हुआ। 1882 में, प्रार्थना समाज के संरक्षण में बंबई में स्थापित आर्य महिला समाज, भारत में ऐसे प्रारंभिक संगठनों में से था। 1913 में शुरूआत करते हुए सरोज नलिनी दत्त ने कई नगरों में महिला समितियों की स्थापना की। 1910 में सरला देवी चौध्रानी ने महिलाओं की स्वतंत्रा पहचान के लिए भारत स्त्राी महामंडल की स्थापना की। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने सार्वजनिक कार्यक्षेत्रा में प्रवेश के नए मार्ग का निर्माण किया। महिलाओं की क्षेत्राीय संगठनों में भागीदारी से मिले अनुभव ने प्रांतीय एवं राष्ट्रीय संगठनों के विकास का मार्ग सुलभ किया। युवा महिला संस्था, महिला ब्रह्म समाज तथा अन्य बृहत् प्रांतीय एवं सामुदायिक समूह ने भी विशिष्ट वर्ग की महिलाओं को राष्ट्रीय स्वतंत्राता को लक्षित करते हुए आत्म उत्थान की प्रेरणा दी।

एनी बेसेंट, दैरोजी जिनारानादासा तथा मार्गेट कोजिन्स ने मद्रास तथा कई अन्य शहरों में इसकी शाखा सहित प्रथम अखिल भारतीय महिला संगठन के रूप में भारतीय महिला संघ की स्थापना की।[7] श्रीमती टाटा तथा अन्य द्वारा स्थापित बंबई प्रेसिडेन्सी विमेन काउंसिल ने अन्य संस्थानों के साथ समायोजन कर अपनी नीतियों एवं कार्यों को निर्धरित किया। यह संस्था बाद में नेशनल काउंसिल ऑपफ इंडिया से जा मिली। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि क्षेत्राीय या प्रांतीय स्तर पर कार्य कर रही सुधरवादी संस्थाओं को समायोजित कर समाज सुधर कार्यक्रमों को संघवादी संरचना में ढाला जा सके।

1926 के आम चुनाव में महिलाओं ने भाग लिया। विमेन्स इंडिया एसोसियेशन की ओर से स्वतंत्रा उम्मीदवार के रूप में भाग लेने वाली कमला देवी चट्टोपाध्याय, कांग्रेस प्रत्याशी से हार गयी। भारतीय महिला संघ ने सरकारी अध्किारियों के पास एक शिष्ट मंडल भेजकर विधन परिषद में महिलाओं को नियुक्त करने का आग्रह किया। तीन महिलाओं मद्रास में डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी, संयुक्त प्रांत के श्रीमती अहमद शाह तथा मध्य प्रांत में श्रीमती ए.काले को नियुक्त किया गया। 1927 में, डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी सर्वसम्मति से परिषद की अध्यक्ष चुन ली गई। जो एक विश्व कीर्तिमान थी।[8] वह उनकी आशाओं पर खरी उतरी जो यह मानते थे कि महिलाएँ राजनीति में व्यापक भूमिका निभा सकती है। प्रथम सत्रा में वे महिलाओं एवं बच्चों की स्थिति में सुधर हेतु विध्यक लाई जिनका उद्देश्य, देवदासी एवं बाल विवाह जैसे कुप्रथाओं का उन्मूलन सभी स्कूल एवं कॉलेजों में चिकित्सा संबंधी जाँच की अनिवार्यता, गरीब लड़कियों के लिए उच्च विद्यालय तक के शैक्षणिक शुल्क में कटौति, बाल अस्पताल की स्थापना तथा अभावग्रस्त महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए अनुदान की व्यवस्था आदि के रूप में जनकल्याण था।

इन महिलाओं की शक्ति उनकी बहुमूल्य राष्ट्र सेवा में निहित थी जो उन्होंने राष्ट्र के लिए अर्पित कर दी और खुद को इसके लिए आन्दोलन में झोंक दिया। भारतीय स्वतंत्राता के लिए लड़ी गयी लम्बी लड़ाई अंततः 15 अगस्त 1947 को माउंट बेटन योजना के साथ समाप्त हुई और लाखों लोगों के सपनों को पूरा करने के लिए स्वतंत्रा भारत का उदय हुआ। इसमें महिलाओं की भूमिका भी कई रूपों में महत्वपूर्ण रही थी। भारी संख्या में महिलाओं की भागीदारी ने स्वराज की महत्ता को बढ़ा दिया तथा इस आन्दोलन को जन आंदोलन बनाने में महिलाएँ मददगार रही।[9]

स्वतंत्रा भारत के संविधन निर्माण में भी महिलायें पीछे नहीं रही। अक्टूबर 1946 में बनी संविधन सभा में सरोजिनी नायडू, दुर्गाबाई देशमुख, रेणुका राय, तथा हंसा मेहता को भी संविधन के निर्माण के लिए चुना गया। इसके साथ ही राजकुमारी अमृत कौर ने संविधन सभा के मौलिक अध्किार पर बनी उप–समिति के सदस्य के रूप में किसी भी रूप में या किसी भी आधर पर होने वाले भेदभाव को समाप्त कर लिंग समानता स्थापित करने हेतु उपबन्धें को आहूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[10]

स्वतंत्राता के बाद विशिष्ट वर्गीय महिला आंदोलन ने मताध्किार संबंधी अपनी लड़ाई भी जीत ली। कांगेस तथा कुछ महिला संगठनों की साझीदारी ने इसे स्थापित किया तथा अब सभी क्षेत्रा से महिलाए राजनीति में हिस्सा ले सकती थी।[11] 1917 में एनी बेसेंट और 1925 में सरोजनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष निर्वाचित हुई थी। इस राजनीतिक भूमिका ने महिलाओं के जीवन में व्यापक परिवर्तन आऐ। अब वे अध्कि आत्मविश्वास से पूर्ण थी तथा अब उनके जीवन से निजी व सर्वाजनिक के पृथकता के बाध्क तत्व समाप्त हो चुके थे। हालाँकि अभी भी जो भूतकाल को आदर्श के रूप में मानते थे उनके लिए यह स्वीकार्य नहीं था और इस मुद्दे में वे विवाद को जारी रखे हुए थे।[12] अतः महिलाओं की क्षमता में विश्वास रखने वाले तथा कुछ संकीर्ण परंपरावादी लोगों के बीच वैचारिक द्वन्द्व कायम था। कुल मिलाकर पाँच ऐसे तथ्य है जिन्होंने 1947 से पहले की भारतीय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एवं संगठनों को आकार प्रदान किया, जैसे औपनिवैशिक शोषण एवं प्रारंभिक जनआंदोलन, महिलाओं के आंदोलन में प्रारंभिक स्तर पर विशिष्ट वर्ग की महिलाओं की भूमिका एवं समाज–सुधरक आन्दोलन तथा पितृसत्तात्मक भारतीय संस्कृति एवं समाज पर उग्र आक्रमण का अभाव।

जब महिलाएँ संघर्षरत थी तब भी उन्होंने हिंसा तथा उग्रता को व्यापक स्तर पर नहीं अपनाया। इसके पफलस्वरूप संविधन में महिलाओं के अध्किार एवं समानता को स्थापित किया गया। जो नहीं हो सका वह था, कांग्रेस में किसी सशक्त महिला विभाग का गठन या पृथक महिला राजनीतिक संगठन का निर्माण। ऐसे संगठन सभी सांविधनिक प्रावधनों को महिलाओं के दिन–प्रतिदिन जीवन में वास्तविक रूप से लागू करवा पाने में सहायक सि(हो सकती थी।[13] पिफर भी हम देखते हैं कि भारत के राष्ट्रीय आंदोलनों में और भारतीय राजनीति में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और भारत की समृध्दि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ

1. नारी देसाई, विमेन इन मॉडर्न इंडिया वोरा एण्ड क. पब्लिशर्स प्रा.लि., बम्बई, 1958, पृष्ठ 113
2. पद्मिनी सेन गुप्ता, दि स्टोरी ऑपफ विमेन इन इंडिया, इंडिया बुक कम्पनी, नई दिल्ली, 1974, पृष्ठ 157
3. मार्ग्रेट कोजिन्स, इंडिया विमेन हुड टुडे, किताब स्टोर, इलाहबाद, 1941, पृष्ठ 17
4. वही, पृष्ठ 70

5. लीला कस्तूरी एवं वीना मजूमदार, विमेन एण्ड नेशनलिज्म, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ 14
6. गेराल्डिन पफोर्ब्स, इंडियन विमेन एण्ड प्रफीड़म मूवमेन्ट ए हिस्टोरियन्स पर्सपेक्टिवस, रिसर्च सेंटर पफॉर विमेन्स स्टडीज, एस.एन.डी.टी. विमेन्स युनिवर्सिटी, मुम्बई, 1997, पृष्ठ 56
7. वही, पृष्ठ 32–34
8. कमला देवी चट्टोपाध्याय, इंडियन विमेन्स बैटल पफॉर प्रफीडम, अभिनव पब्लिकेशनस, नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ 94
9. कमला देवी चट्टोपाध्याय, अवेकनिंग ऑपफ इंडियन विमेन, एवरी मेन्स प्रेस, मद्रस, 1939, पृष्ठ 53
10. 'स्त्राी ध्र्म' दिसम्बर, 1927
11. विमेन्स इंडिया एसोसिएशन रिपोर्ट, 1931–32, पृष्ठ 6–7
12. राध कुमार, दि हिस्ट्री ऑपफ डुइंग, काली पफॉर विमेन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ 92
13. वीना मजुमदार, सिम्बॅल्स ऑपफ पॉवर, अलाइड़ पब्लिशर्स प्रा. लि. बॉम्बे, 1979, पृष्ठ 16